प्रतिदर्श प्रश्न पत्र - 2
विषय - हिंदी (आधार) - 302
कक्षा - बारहवीं (2023-24)

निर्धारित समय: 3 hours **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य निर्देश:

- निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए :-
- इस प्रश्न पत्र में खंड 'अ' में वस्तुपरक तथा खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं।
- खंड 'अ' में उप - प्रश्नों सहित 40 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं, सभी 40 प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
- खंड 'ब' में 08 वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों के उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

खंड अ (वस्तुपरक प्रश्न)

1. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[10]**

कैसी विडंबना है कि उन्नीसवीं शताब्दी में जब अंग्रेजी 'ओरिएंटलिस्ट' कादम्बरी, कथा-सरित्सागर, पंचतन्त्र जैसी भारतीय कथाओं के पीछे पागल थे, स्वयं भारतीय लेखक 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' लिखने के लिए व्याकुल थे। ये हैं उपनिवेशवाद के दो चेहरे!

निस्सन्देह कुछ लोग अपनी भाषा में 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' लिखने में कुछ-कुछ कामयाब भी हो गए। उदाहरण के लिए लाला श्रीनिवास दास का 'परीक्षागुरु' (1882), जिसे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'हिन्दी में अंग्रेजी ढंग का पहला उपन्यास' माना। लेकिन पूरा-पूरा 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' सबसे न बन पड़ा। खासतौर से उनसे जो सर्जनशील रचनाकार थे; जैसे हिन्दी से ही उदाहरण लें तो ठाकुर जगमोहन सिंह, जिनकी कथाकृति 'श्यामास्वप्न' किसी भी तरह 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' नहीं है। ऐसे सर्जनशील रचनाकारों के सिरमौर हैं बंकिमचन्द्र, जिन्हें प्रथम भारतीय उपन्यासकार होने का गौरव प्राप्त है।

छब्बीस वर्ष की कच्ची उम्र में बंकिमचन्द्र ने 'दुर्गेशनन्दिनी' (1865) नाम का अपना पहला बंगला उपन्यास प्रकाशित किया और एक साल के बाद 'कपालकुंडला' (1866) ; फिर तीन साल के अंतराल के बाद 'मृणालिनी' (1869)। इनमें से एक भी 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' नहीं है। जगमोहन सिंह के 'श्यामास्वप्न' के समान ही ये तीनों उपन्यास किसी 'अंग्रेजी ढंग के नावेल' की अपेक्षा संस्कृत की 'कादम्बरी' की याद दिलाते हैं। यह भी एक विडंबना ही है। एक लेखक कथा की पुरानी परम्परा से मुक्त होकर एकदम आधुनिक ढंग की नई कथाकृति रचना चाहता है और परम्परा है कि उसके सर्जनात्मक अवचेतन का संचालन कर रही है। कंबल बाबाजी को कैसे छोड़े! इस तरह बंकिमचन्द्र की रचना प्रक्रिया से गुजरकर जो चीज निकली उसके लिए सही नाम एक ही है - रोमांस!

उपन्यास का अर्थ जिनके लिए 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' है - फिर उसकी परिभाषा जो भी हो, वे इसे बंकिमचन्द्र की विफलता मानेंगे लेकिन मेरी दृष्टि से लेखक की इस विफलता में ही भारतीय उपन्यास की सार्थकता निहित है। भारतीय उपन्यास के मूलाधार उन्नीसवीं शताब्दी के ये 'रोमांस' ही हैं, न कि तथाकथित अंग्रेजी ढंग के उपन्यास! उन्नीसवीं शताब्दी के भारतीय

'कपालकुंडला' अपने जमाने की अत्याधिक लोकप्रिय कृति होने के साथ ही स्थायी कीर्ति की हकदार है। तथाकथित 'अंग्रेजी ढंग के नावेल' का तिरस्कार करके ही बंकिमचन्द्र के रोमांसधर्मी उपन्यासों ने भारतीय राष्ट्र के भारतीय उपन्यास की अपनी पहचान बनाने में पहल की।
अंग्रेजी ढंग के 'नावेल' का तिरस्कार वस्तुत: उपनिवेशवाद का तिरस्कार है। भारत से पहले अंग्रेजी ढंग के 'नावेल' को उत्तरी अमेरिका अस्वीकार ढंग के 'नावेल' का अनुकरण नहीं किया। 'स्कार्लेट लेटर' और 'मोबी डिक' ऐसे रोमांस' हैं जिन्हें 'राष्ट्रीय रूपक' के रूप में आज भी ग्रहण किया जाता है। अंग्रेजी साम्राज्यवाद से अपने आपको मुक्त कर अमेरिकी प्रतिभा ने आख्यान ने रूपबन्ध में भी स्वतन्त्रता प्राप्त की। इस प्रकार उत्तरी अमेरिका में राष्ट्र और उपन्यास का जन्म साथ-साथ हुआ। तब तक के अंग्रेजी 'नावेल' के रूपबन्ध में एक स्वतन्त्र राष्ट्र की उद्दाम आकांक्षाओं का अँटना संभव न था। नए राष्ट्र के एक नितांत नए उन्मुक्त रुपबन्ध का सृजन किया।

(i) कपालकुंडला किसके प्रतिनिधि के रूप में है?

i. अंग्रेजी नॉवेल
ii. बांग्ला उपन्यास
iii. भारतीय मानस
iv. रोमांटिक उपन्यास

(ii) भारतीय उपन्यास का मूलाधार क्या है?

i. अंग्रेजी ढंग का नॉवेल
ii. परीक्षा गुरु
iii. कादंबरी
iv. बंकिमचंद्र के उपन्यास

(iii) बंकिमचंद्र का पहला उपन्यास कौन था?

i. दुर्गेशनंदिनी
ii. कपालकुंडला
iii. मृणालिनी
iv. श्यामास्वप्न

(iv) हिन्दी में अंग्रेजी ढंग का पहला उपन्यास किसे माना गया?

i. मृणालिनी
ii. परीक्षागुरु
iii. कादंबरी

(v) प्रस्तुत उपन्यास किस विषय पर आधारित है?

i. उपनिवेशवाद
ii. रोमांस
iii. कहानी
iv. उपन्यास

(vi) बंकिमचंद्र की आरंभिक रचनाओं का केंद्र क्या था?

i. अंग्रेजी नॉवेल
ii. सृजन
iii. रोमांस
iv. उपनिवेशवाद

(vii) **निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-**

I. बंकिमचंद्र की रचना प्रक्रिया से गुजरने पर रोमांस उसके निष्कर्ष के रूप में सामने आता है।
II. भारतीय उपन्यासों के आधार अंग्रेजी ढंग के उपन्यास हैं।
III. अंग्रेजी ढंग के उपन्यासों का तिरस्कार उपनिवेशवाद का तिरस्कार है।

उपरिलिखित कथनों में से कौन सही है/हैं?

i. I और II
ii. II और III
iii. I और III
iv. केवल III

(viii) निम्न में से किसको आज भी राष्ट्रीय रूपक के रूप में माना जाता है?

i. मोबी डिक
ii. कादंबरी
iii. पंचतंत्र
iv. कपालकुंडला

(ix) उन्नीसवी शताब्दी में अंग्रेज किन भारतीयों कथाओं के पीछे पागल नहीं थे?

i. कादंबरी
ii. उपन्यास
iii. मृणालिनी
iv. पंचतंत्र

कथन (A): अमेरिकी प्रतिभा अपने आप को अंग्रेजी साम्राज्यवाद से मुक्त नहीं कर पाई।
कारण (R): उन्नीसवीं शताब्दी के भारतीय मानस का सही प्रतिनिधित्व 'परीक्षागुरु' करता है।

i. कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
ii. कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।
iii. कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
iv. कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

2. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

दिवसावसान का समय-
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या-सुन्दरी, परी सी,
धीरे, धीरे, धीरे
तिमिरांचल में चंचलता का नहीं कहीं आभास,
मधुर-मधुर हैं दोनों उसके अधर,
किंतु गंभीर, नहीं है उसमें हास-विलास।
हँसता है तो केवल तारा एक-
गुँथा हुआ उन घुँघराले काले-काले बालों से,
हृदय राज्य की रानी का वह करता है अभिषेक।
अलसता की-सी लता,
किंतु कोमलता की वह कली,
सखी-नीरवता के कंधे पर डाले बाँह,
छाँह सी अम्बर-पथ से चली।
नहीं बजती उसके हाथ में कोई वीणा,
नहीं होता कोई अनुराग-राग-आलाप,
नूपुरों में भी रुन-झुन रुन-झुन नहीं,
सिर्फ़ एक अव्यक्त शब्द-सा 'चुप चुप चुप'
है गूँज रहा सब कहीं-
व्योम मंडल में, जगतीतल में-
सोती शान्त सरोवर पर उस अमल कमलिनी-दल में-
सौंदर्य-गर्विता-सरिता के अति विस्तृत वक्षस्थल में-
धीर-वीर गम्भीर शिखर पर हिमगिरि-अटल-अचल में-
उत्ताल तरंगाघात-प्रलय घनगर्जन-जलधि-प्रबल में-
क्षिति में, जल में,नभ में, अनिल-अनल में-
सिर्फ़ एक अव्यक्त शब्द-सा 'चुप चुप चुप'
है गूँज रहा सब कहीं-

थके हुए जीवों को वह सस्नेह,
प्याला एक पिलाती।
सुलाती उन्हें अंक पर अपने,
दिखलाती फिर विस्मृति के वह अगणित मीठे सपने।
अर्द्धरात्रि की निश्चलता में हो जाती जब लीन,
कवि का बढ़ जाता अनुराग,
विरहाकुल कमनीय कंठ से,
आप निकल पड़ता तब एक विहाग!

(i) काव्यांश में प्रयुक्त दिवसावसान शब्द का क्या अर्थ है?

क) दिवस का आरंभ
ख) दिन का समय
ग) रात्रि का अंत
घ) दिन का बीत जाना

(ii) कवि का अनुराग कब बढ़ जाता है?

क) अर्धरात्रि में
ख) प्रातःकाल में
ग) रात्रि में
घ) संध्या समय में

(iii) संध्या के समय में हर तरफ क्या गूँजने लगता है?

क) वीणा की आवाज
ख) सन्नाटा
ग) राग आलाप
घ) नुपूरों की रूनझुन

(iv) अर्धरात्रि की निश्चलता में कवि का अनुराग बढ़ने पर भी उसके कंठ से विहाग के स्वर क्यों निकलते हैं?
निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-
कथन (I): अर्धरात्रि के एकांत में कवि के मन में जीवन के प्रति प्रेम उमड़ पड़ता है
कथन (II): कवि जीवन को अधिक सार्थक और सुखमय बनाने के लिए प्रेरित है
कथन (III): कवि संध्या के साथ अस्त होना चाहता है
कथन (IV): कवि रात्रि की नीरवता में खो जाता है
निम्नलिखित विकल्पों पर विचार कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए।

क) केवल कथन (II) सही है।
ख) केवल कथन (I) और (II) सही है।
ग) केवल कथन (I) सही है।
घ) केवल कथन (III) और (IV) सही है।

(v) कॉलम 1 को कॉलम 2 से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए।

1. सिर्फ एक अव्यक्त शब्द-सा "चुप चुप चुप"	(i) उपमा अलंकार
2. संध्या सुन्दरी परी-सी	(ii) मानवीकरण अलंकार
3. मधुर-मधुर हैं दोनों उसके अधर-किन्तु गंभीर नहीं	(iii) पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार

क) 1-(i), 2-(iii), 3-(ii)   ख) 1-(i), 2-(ii), 3-(iii)

ग) 1-(iii), 2-(i), 3(ii)   घ) 1-(ii), 2-(iii), 3-(i)

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए-** **[5]**

(i) हिन्दी में नेट पत्रकारिता किसके साथ आरंभ हुई? **[1]**

क) दैनिक जागरण के साथ   ख) वैब दुनिया के साथ

ग) दैनिक भास्कर के साथ   घ) राजस्थान पत्रिका के साथ

(ii) समाचार पत्र प्रकाशित या प्रसारित करने के लिए आखिरी समय सीमा को ________ कहा जाता है। **[1]**

क) रैड लाइन   ख) ब्लू लाइन

ग) ब्लैक लाइन   घ) डैड लाइन

(iii) तथ्यों की शुद्धता, वस्तुपरकता, निष्पक्षता, संतुलन और स्रोत हैं- **[1]**

क) संपादन के सिद्धांत   ख) संपादन के गुण

ग) संपादन के प्रकार   घ) संपादन के तत्त्व

(iv) पत्रकारीय लेखन में सर्वाधिक महत्त्व किस बात का है? **[1]**

क) लोगों को विश्वास में लाने का   ख) दिखावा करने का

ग) सभी   घ) समसामयिक घटनाओं की जानकारी

(v) विशेष लेखन के कितने क्षेत्र हैं? **[1]**

क) दो   ख) एक

ग) अनेक   घ) चार

4. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

हम एक दुर्बल को लाएँगे
एक बंद कमरे में
उससे पूछेंगे तो आप क्या अपाहिज हैं?
तो आप क्यों अपाहिज हैं?
आपका अपाहिजपन तो दुख देता होगा
देता है?
(कैमरा दिखाओ इसे बड़ा-बड़)
हाँ तो बताइए आपका दुख क्या हैं
जल्दी बताइए वह दुख बताइए
बता नहीं पाएगा।

(i) प्रस्तुत पंक्तियों में समर्थ शक्तिवान किसके लिए कहा गया है?

क) मीडिया को   ख) जनता को

ग) दूरदर्शन को   घ) सरकार को

(ii) एक अपाहिज को अपने कार्यक्रम में दिखाना किस मानसिकता को दर्शाता है?

क) क्रूर   ख) कारोबारी

ग) संवेदनशील   घ) संवेदनहीन

(iii) अपाहिज व्यक्ति से उसका दुख पूछने से क्या तात्पर्य है?

क) उस व्यक्ति को रुलाना   ख) अपना कारोबार बढ़ाना

ग) समाज को सच्चाई बताना   घ) समाज को रुलाना

(iv) कविता में दुर्बल किसे कहा गया है?

क) कैमरामैन को   ख) पाठक को

ग) अपाहिज व्यक्ति को   घ) दर्शक को

(v) कोष्टक में लिखा हुए वाक्य को कार्यक्रम संचालक ने किससे कहा है?

क) अपने आप से   ख) अपाहिज व्यक्ति से

ग) दर्शक से   घ) अपने सहायक से

5. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

प्रकार संपत्ति के अधिकार, जीविकोपार्जन के लिए आवश्यक औज़ार व सामग्री रखने के अधिकार, जिससे शरीर को स्वस्थ रखा जा सके, के अर्थ में भी 'स्वतंत्रता' पर कोई आपत्ति नहीं हो सकती। तो फिर मनुष्य की शक्ति के सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की भी स्वतंत्रता क्यों नहीं प्रदान की जाए?
जाति-प्रथा के पोषक, जीवन, शारीरिक-सुरक्षा तथा संपत्ति के अधिकार की स्वतंत्रता को तो स्वीकार कर लेंगे, परंतु मनुष्य के सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता देने के लिए जल्दी तैयार नहीं होंगे, क्योंकि इस प्रकार की स्वतंत्रता का अर्थ होगा अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता किसी को नहीं है, तो उसका अर्थ उसे 'दासता' में जकड़कर रखना होगा, क्योंकि 'दासता' केवल कानून पराधीनता को ही नहीं कहा जा सकता। 'दासता' में वह स्थिति भी सम्मिलित है जिससे कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। यह स्थिति कानूनी पराधीनता न होने पर भी पाई जा सकती है। उदाहरणार्थ, जाति प्रथा की तरह ऐसे वर्ग होना संभव है, जहाँ कुछ लोगों को अपनी इच्छा के विरुद्ध पेशे अपनाने पड़ते हैं। (बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर)

(i) दासता में कौन-सी अवधारणा सम्मिलित नहीं है?

क) कानूनी पराधीनता का होना
ख) इच्छा के विरुद्ध कार्य करना
ग) दूसरों के द्वारा निश्चित कार्य करना
घ) स्वाधीनता के साथ जीना

(ii) मनुष्य के प्रभावशाली प्रयोग से लेखक का क्या तात्पर्य है?

क) उसे अपनी इच्छा से जाति के चयन का अधिकार मिले
ख) उसे शारीरिक-सुरक्षा तथा संपत्ति का अधिकार दिया जाए
ग) उसे अपनी इच्छा से कार्य करने की स्वतंत्रता दी जाए
घ) उसे शारीरिक स्वतंत्रता प्रदान की जाए

(iii) जाति-प्रथा के पोषक यदि मनुष्य के लक्षण एवं प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता दें, तब इसका क्या परिणाम होगा?

क) दासता को बढ़ावा मिलेगा
ख) कानूनी-पराधीनता बढ़ जाएगी
ग) स्वतंत्रता को बढ़ावा मिलेगा
घ) लोकतांत्रिक मूल्य सुदृढ़ होंगे

(iv) निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।
कथन (A): इसी प्रकार संपत्ति के अधिकार, जीविकोपार्जन के लिए आवश्यक औज़ार व सामग्री रखने के अधिकार, जिससे शरीर को स्वस्थ रखा जा सके, के अर्थ में भी 'स्वतंत्रता' पर कोई आपत्ति नहीं हो सकती।

क) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

ख) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

ग) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(v) गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

i. संपत्ति के अधिकार में स्वतंत्रता पर आपत्ति हो सकती है।
ii. स्वतंत्रता का अर्थ है दासता में जकड़ना।
iii. सभी लोग अपनी इच्छा के अनुसार ही पेशा अपनाते हैं।

उपरिलिखित कथनों में से कौन सही है/हैं?

क) केवल ii

ख) केवल iii

ग) केवल i

घ) इनमें से कोई नहीं

6. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हेतु निर्देशानुसार सही विकल्प का चयन कीजिए-** **[10]**

(i) यशोधर बाबू को अपनी सिल्वर वेडिंग की पार्टी अच्छी क्यों नहीं लगी? **[1]**

क) क्योंकि ये उनके मित्रों से रखी थी।

ख) क्योंकि उन्हें इसकी जानकारी नहीं थी।

ग) क्योकि वो उनके बेटे ने दी थी।

घ) क्योंकि ये उनकी पत्नी ने दी थी।

(ii) यशोधर पंत के ऑफिस में असिस्टेंट ग्रेड में नया कौन आया था? **[सिल्वर वेडिंग]** **[1]**

क) चड्ढा

ख) वाई० डी०

ग) किशनदा

घ) मेनन

(iii) यशोधर बाबू का विवाह कब हुआ था? **[1]**

क) 6 फरवरी, 1945

ख) 5 फरवरी, 1947

ग) 6 फरवरी, 1946

घ) 6 फरवरी, 1947

(iv) निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए। **[1]**
कथन (A): यशोधर बाबू आत्मीय और पारिवारिक जीवन शैली के समर्थक थे।

क) कथन (A) सही है, कारण (R) गलत है।

ख) कथन (A) सही नहीं है, कारण (R) सही है।

ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं, किन्तु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।

घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं, कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

(v) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:- **[1]**

कथन (I): वसंत पाटिल आनंदा से उम्र में छोटा था।
कथन (II): मास्टर जी ने आनंदा को कक्षा का मॉनिटर बनाया था।
कथन (III): कक्षा में आनंदा अपने सभी सहपाठियों में सबसे छोटा था।
कथन (IV): आनंदा हमेशा कुछ-न-कुछ पढ़ता ही रहता था।
सही कथन/कथनों वाले विकल्प को चयनित कर लिखिए।

क) कथन (I), (II) तथा (IV) सही हैं।

ख) कथन (II), (III) तथा (IV) सही हैं।

ग) कथन (I) तथा (II) सही हैं।

घ) कथन (II) तथा (III) सही हैं।

(vi) **जूझ** पाठ के आधार पर पाठशाला जाने की बात लेखक ने सबसे पहले किससे की? **[1]**

क) दादा से

ख) माँ से

ग) सौंदलगेकर से

घ) दत्ता जी राव से

(vii) लेखक के पिता के अनुसार खेलना और सिनेमा देखना कैसी आदतें हैं ? **[जूझ]** **[1]**

क) पढ़ाई से भी अच्छी

ख) बहुत जरूरी

ग) सही

घ) गलत

(viii) **अतीत में दबे पाँव** पाठ के आधार पर मुअनजो-दड़ो अपने काल में किसका केंद्र रहा होगा? **[1]**

क) सभ्यता का

ख) धर्म का

ग) व्यापार का

घ) राजनीति का

(ix) मुअनजो-दड़ो का क्या अर्थ है? **[1]**

क) मुर्दों का टीला

ख) मोहन का नगर

(x) **अतीत में दबे पाँव** पाठ के आधार पर मुअनजो-दड़ो के अजायबघर की क्या खासियत है? [1]

क) पत्थर के औज़ार मिलना ख) माप-तौल के पत्थर मिलना

ग) सोने के गहनों का मिलना घ) हथियारों का न मिलना

खंड - ब (वर्णनात्मक प्रश्न)

7. **निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लेख लिखिये:** [6]

(i) **विज्ञापन की बढ़ती हुई लोकप्रियता** विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए। [6]

(ii) **मनोरंजन के आधुनिक साधन** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए। [6]

(iii) **उपभोक्ता-शोषण** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए। [6]

8. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** [4]

(i) i. कहानी में पात्रों के द्वंद्व का क्या महत्त्व है? [3]

(ii) **अथवा**

i. मुद्रित माध्यमों की सीमा क्या है ? [3]

(iii) i. **संवाद** से जुड़ा वह कौन-सा तथ्य है जो रेडियो नाटक पर विशेष रूप से लागू होता है और क्यों? [3]

(iv) **अथवा**

i. "बीट " को परिभाषित करें। [3]

9. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** [6]

(i) एंकर-बाइट किसे कहते हैं? [3]

(ii) संपादकीय किसी नाम से क्यों नहीं छापा जाता? [3]

(iii) एक खेल पत्रकार अपनी जानकारियों को किस प्रकार दिलचस्प बनाकर पेश कर सकता है? [3]

10. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** [6]

(i) **दिन जल्दी-जल्दी ढलता है** कविता में बच्चों की प्रत्याशा को कवि ने किस प्रकार प्रस्तुत किया है? [3]

(iii) **किसबी, किसान-कुल** छंद के आधार पर बताइए कि पेट की आग की विशालता और भयावहता को तुलसीदास ने कैसे प्रस्तुत किया है? **[3]**

11. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[4]**

(i) फ़िराक गोरखपुरी की **रुबाइयाँ** में भाई-बहन के संबंध को किस प्रकार व्यक्त किया गया है, और राखी के लच्छे को किसकी उपमा दी गई है? स्पष्ट कीजिए। **[2]**

(ii) **बिंब स्पष्ट करें-** **[2]**

सबसे तेज़ बौछारें गयीं भादो गया
सवेरा हुआ।
खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा
शरद आया पुलों को पार करते हुए
अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज़ चलाते हुए
घंटी बजाते हुए ज़ोर-ज़ोर से
चमकीले इशारों से बुलाते हुए और
आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए
कि पतंग ऊपर उठ सके।

(iii) अपने परिवेश के उपमानों का प्रयोग करते हुए सूर्योदय और सूर्यास्त का शब्दचित्र खींचिए। **[2]**

12. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[6]**

(i) विभिन्न परिस्थितियों में भाषा का प्रयोग भी अपना रूप बदलता रहता है कभी औपचारिक रूप में आती है, तो कभी अनौपचारिक रूप में। **बाज़ार दर्शन** पाठ में से दोनों प्रकार के तीन-तीन उदाहरण छाँटकर लिखिए। **[3]**

(ii) दिन-दिन गहराते पानी के संकट से निपटने के लिए क्या आज का युवा वर्ग **काले मेघा पानी दे** की इंदर सेना की तर्ज पर कोई सामूहिक आंदोलन प्रारंभ कर सकता है? अपने विचार लिखिए। **[3]**

(iii) ढोलक की आवाज़ अपने गुण और शक्ति की दृष्टि से कहीं कम प्रभावकारी थी और कहीं अधिक, ऐसा क्यों? **[3]**

13. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[4]**

(i) लछमिन ससुरालवालों से अलग क्यों हुई? इसका क्या परिणाम हुआ? **[2]**

(ii) भक्तिन की बेटी पर पंचायत द्वारा पति थोप देने की घटना के विरोध में टिप्पणी लिखिए। **[2]**

विषय बनाते हुए वाद-वाद प्रतियोगिता का आयोजन करें।

14. **निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :-** **[4]**

(i) **सिल्वर वैडिंग** पाठ में नया छोकरा चड्ढा किस प्रकार की धृष्टता करता था? **[2]**

(ii) पाठशाला पहुँचकर लेखक को किन-किन परेशानियों का सामना करना पड़ा? **जूझ** पाठ के आधार पर बताइए। **[2]**

(iii) **अतीत में दबे पाँव** पाठ के आधार पर शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए। **[2]**

खंड अ (वस्तुपरक प्रश्न)
Solutions

1. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

कैसी विडंबना है कि उन्नीसवीं शताब्दी में जब अंग्रेजी 'ओरिएंटलिस्ट' कादम्बरी, कथा-सरित्सागर, पंचतन्त्र जैसी भारतीय कथाओं के पीछे पागल थे, स्वयं भारतीय लेखक 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' लिखने के लिए व्याकुल थे। ये हैं उपनिवेशवाद के दो चेहरे!

निस्सन्देह कुछ लोग अपनी भाषा में 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' लिखने में कुछ-कुछ कामयाब भी हो गए। उदाहरण के लिए लाला श्रीनिवास दास का 'परीक्षागुरु' (1882), जिसे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'हिन्दी में अंग्रेजी ढंग का पहला उपन्यास' माना। लेकिन पूरा-पूरा 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' सबसे न बन पड़ा। खासतौर से उनसे जो सर्जनशील रचनाकार थे; जैसे हिन्दी से ही उदाहरण लें तो ठाकुर जगमोहन सिंह, जिनकी कथाकृति 'श्यामास्वप्न' किसी भी तरह 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' नहीं है। ऐसे सर्जनशील रचनाकारों के सिरमौर हैं बंकिमचन्द्र, जिन्हें प्रथम भारतीय उपन्यासकार होने का गौरव प्राप्त है।

छब्बीस वर्ष की कच्ची उम्र में बंकिमचन्द्र ने 'दुर्गेशनन्दिनी' (1865) नाम का अपना पहला बंगला उपन्यास प्रकाशित किया और एक साल के बाद 'कपालकुंडला' (1866) ; फिर तीन साल के अंतराल के बाद 'मृणालिनी' (1869)। इनमें से एक भी 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' नहीं है। जगमोहन सिंह के 'श्यामास्वप्न' के समान ही ये तीनों उपन्यास किसी 'अंग्रेजी ढंग के नावेल' की अपेक्षा संस्कृत की 'कादम्बरी' की याद दिलाते हैं। यह भी एक विडंबना ही है। एक लेखक कथा की पुरानी परम्परा से मुक्त होकर एकदम आधुनिक ढंग की नई कथाकृति रचना चाहता है और परम्परा है कि उसके सर्जनात्मक अवचेतन का संचालन कर रही है। कंबल बाबाजी को कैसे छोड़े! इस तरह बंकिमचन्द्र की रचना प्रक्रिया से गुजरकर जो चीज निकली उसके लिए सही नाम एक ही है - रोमांस!

उपन्यास का अर्थ जिनके लिए 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' है - फिर उसकी परिभाषा जो भी हो, वे इसे बंकिमचन्द्र की विफलता मानेंगे लेकिन मेरी दृष्टि से लेखक की इस विफलता में ही भारतीय उपन्यास की सार्थकता निहित है। भारतीय उपन्यास के मूलाधार उन्नीसवीं शताब्दी के ये 'रोमांस' ही हैं, न कि तथाकथित अंग्रेजी ढंग के उपन्यास! उन्नीसवीं शताब्दी के भारतीय मानस का सही प्रतिनिधित्व 'कपालकुंडला' करती है, 'परीक्षागुरु' नहीं। 'परीखागुरु' का महत्व अधिक से अधिक ऐतिहासिक है और वह भी सिर्फ हिन्दी के लिए! जब कि 'कपालकुंडला' अपने जमाने की अत्याधिक लोकप्रिय कृति होने के साथ ही स्थायी कीर्ति की हकदार है। तथाकथित 'अंग्रेजी ढंग के नावेल' का तिरस्कार करके ही बंकिमचन्द्र के रोमांसधर्मी उपन्यासों ने भारतीय राष्ट्र के भारतीय उपन्यास की अपनी पहचान बनाने में पहल की।

अंग्रेजी ढंग के 'नावेल' का तिरस्कार वस्तुत: उपनिवेशवाद का तिरस्कार है। भारत से पहले अंग्रेजी ढंग के 'नावेल' को उत्तरी अमेरिका अस्वीकार ढंग के 'नावेल' का अनुकरण नहीं किया। 'स्कार्लेट लेटर' और 'मोबी डिक' ऐसे रोमांस' हैं जिन्हें 'राष्ट्रीय रूपक' के रूप में आज भी ग्रहण किया जाता है। अंग्रेजी साम्राज्यवाद से अपने आपको मुक्त कर अमेरिकी प्रतिभा ने आख्यान ने रूपबन्ध में भी स्वतन्त्रता प्राप्त की। इस प्रकार उत्तरी अमेरिका में राष्ट्र और उपन्यास का जन्म साथ-साथ हुआ।

(i) (iii) भारतीय मानस
(ii) (iv) बंकिमचंद्र के उपन्यास
(iii) (i) दुर्गेशनंदिनी
(iv) (ii) परीक्षागुरु
(v) (iv) उपन्यास
(vi) (iii) रोमांस
(vii) (iii) I और III
(viii) (i) मोबी डिक
(ix) (iii) मृणालिनी
(x) (iii) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

2. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

दिवसावसान का समय-
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या-सुन्दरी, परी सी,
धीरे, धीरे, धीरे
तिमिरांचल में चंचलता का नहीं कहीं आभास,
मधुर-मधुर हैं दोनों उसके अधर,
किंतु गंभीर, नहीं है उसमें हास-विलास।
हँसता है तो केवल तारा एक-
गुँथा हुआ उन घुँघराले काले-काले बालों से,
हृदय राज्य की रानी का वह करता है अभिषेक।
अलसता की-सी लता,
किंतु कोमलता की वह कली,
सखी-नीरवता के कंधे पर डाले बाँह,
छाँह सी अम्बर-पथ से चली।
नहीं बजती उसके हाथ में कोई वीणा,
नहीं होता कोई अनुराग-राग-आलाप,
नूपुरों में भी रुन-झुन रुन-झुन नहीं,
सिर्फ़ एक अव्यक्त शब्द-सा 'चुप चुप चुप'
है गूँज रहा सब कहीं-
व्योम मंडल में, जगतीतल में-
सोती शान्त सरोवर पर उस अमल कमलिनी-दल में-
सौंदर्य-गर्विता-सरिता के अति विस्तृत वक्षस्थल में-
धीर-वीर गम्भीर शिखर पर हिमगिरि-अटल-अचल में-
उत्ताल तरंगाघात-प्रलय घनगर्जन-जलधि-प्रबल में-

है गूँज रहा सब कहीं-
और क्या है? कुछ नहीं।
मदिरा की वह नदी बहाती आती,
थके हुए जीवों को वह सस्नेह,
प्याला एक पिलाती।
सुलाती उन्हें अंक पर अपने,
दिखलाती फिर विस्मृति के वह अगणित मीठे सपने।
अर्द्धरात्रि की निश्चलता में हो जाती जब लीन,
कवि का बढ़ जाता अनुराग,
विरहाकुल कमनीय कंठ से,
आप निकल पड़ता तब एक विहाग!

(i) **(घ)** दिन का बीत जाना
व्याख्या: दिन का बीत जाना

(ii) **(क)** अर्धरात्रि में
व्याख्या: अर्धरात्रि में

(iii) **(ख)** सन्नाटा
व्याख्या: सन्नाटा

(iv) **(ख)** केवल कथन (I) और (II) सही है।
व्याख्या: केवल कथन (I) और (II) सही है।

(v) **(ग)** 1-(iii), 2-(i), 3(ii)
व्याख्या: 1-(iii), 2-(i), 3(ii)

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए-

(i) **(ख)** वैब दुनिया के साथ
व्याख्या: हिन्दी में नेट पत्रकारिता वैब दुनिया के साथ आरंभ हुई।

(ii) **(घ)** डैड लाइन
व्याख्या: डैड लाइन

(iii) **(क)** संपादन के सिद्धांत
व्याख्या: संपादन के सिद्धांत

(iv) **(घ)** समसामयिक घटनाओं की जानकारी
व्याख्या: पत्रकारीय लेखन में सर्वाधिक महत्त्व समसामयिक घटनाओं की जानकारी पर है।

(v) **(ग)** अनेक
व्याख्या: विशेष लेखन के अनेक क्षेत्र हैं। जैसे- व्यापार, खेल, मनोरंजन, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कृषि, स्वास्थ्य इत्यादि।

4. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

हम एक दुर्बल को लाएँगे
एक बंद कमरे में
उससे पूछेंगे तो आप क्या अपाहिज हैं?
तो आप क्यों अपाहिज हैं?
आपका अपाहिजपन तो दुख देता होगा
देता है?
(कैमरा दिखाओ इसे बड़ा-बड़)
हाँ तो बताइए आपका दुख क्या हैं
जल्दी बताइए वह दुख बताइए
बता नहीं पाएगा।

(i) **(क)** मीडिया को
व्याख्या: मीडिया को

(ii) **(ख)** कारोबारी
व्याख्या: कारोबारी

(iii) **(क)** उस व्यक्ति को रुलाना
व्याख्या: उस व्यक्ति को रुलाना

(iv) **(ग)** अपाहिज व्यक्ति को
व्याख्या: अपाहिज व्यक्ति को

(v) **(घ)** अपने सहायक से
व्याख्या: अपने सहायक से

5. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**
इसी प्रकार स्वतंत्रता पर भी क्या कोई आपत्ति हो सकती है? गमनागमन की स्वाधीनता, जीवन तथा शारीरिक सुरक्षा की स्वाधीनता के अर्थों में शायद ही कोई 'स्वतंत्रता' का विरोध करे। इसी प्रकार संपत्ति के अधिकार, जीविकोपार्जन के लिए आवश्यक औज़ार व सामग्री रखने के अधिकार, जिससे शरीर को स्वस्थ रखा जा सके, के अर्थ में भी 'स्वतंत्रता' पर कोई आपत्ति नहीं हो सकती। तो फिर मनुष्य की शक्ति के सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की भी स्वतंत्रता क्यों नहीं प्रदान की जाए? जाति-प्रथा के पोषक, जीवन, शारीरिक-सुरक्षा तथा संपत्ति के अधिकार की स्वतंत्रता को तो स्वीकार कर लेंगे, परंतु मनुष्य के सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता देने के लिए जल्दी तैयार नहीं होंगे, क्योंकि इस प्रकार की स्वतंत्रता का अर्थ होगा अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता किसी को नहीं है, तो उसका अर्थ उसे 'दासता' में जकड़कर रखना होगा, क्योंकि 'दासता' केवल कानून पराधीनता को ही नहीं कहा जा सकता। 'दासता' में वह स्थिति भी सम्मिलित है जिससे कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। यह स्थिति कानूनी पराधीनता न होने पर भी पाई जा सकती है। उदाहरणार्थ, जाति प्रथा की तरह ऐसे वर्ग होना संभव है, जहाँ कुछ लोगों को अपनी इच्छा के विरुद्ध पेशे अपनाने पड़ते हैं। (बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर)

(ii) **(ग)** उसे अपनी इच्छा से कार्य करने की स्वतंत्रता दी जाए
व्याख्या: उसे अपनी इच्छा से कार्य करने की स्वतंत्रता दी जाए

(iii) **(घ)** लोकतांत्रिक मूल्य सुदृढ़ होंगे
व्याख्या: लोकतांत्रिक मूल्य सुदृढ़ होंगे

(iv) **(ग)** कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
व्याख्या: कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(v) **(घ)** इनमें से कोई नहीं
व्याख्या: इनमें से कोई नहीं

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हेतु निर्देशानुसार सही विकल्प का चयन कीजिए-

(i) **(ख)** क्योंकि उन्हें इसकी जानकारी नहीं थी।
व्याख्या: सुबह ऑफिस जाते समय यशोधर बाबू से घर के किसी सदस्य ने इस पार्टी के आयोजन के बारे में चर्चा तक नहीं की और न ही किसी ने उनसे कुछ पूछा इसलिए उन्हें ये पार्टी अच्छी नहीं लगी।

(ii) **(क)** चड्ढा
व्याख्या: यशोधर पंत के ऑफिस में चड्ढा नया आया था, वह सीधे असिस्टेंट ग्रेड में आ गया था। उसकी हरकतें पंत जी को कहीं से भी अच्छी नहीं लगती थी।

(iii) **(घ)** 6 फरवरी, 1947
व्याख्या: 6 फरवरी, 1947

(iv) **(ग)** कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं, किन्तु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।
व्याख्या: कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं, किन्तु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।

(v) **(क)** कथन (I), (II) तथा (IV) सही हैं।
व्याख्या: कथन (I), (II) तथा (IV) सही हैं।

(vi) **(ख)** माँ से
व्याख्या: माँ से

(vii) **(घ)** गलत
व्याख्या: लेखक के पिता खेलना और सिनेमा देखने जैसी आदतों को गलत मानते हैं। इसी कारण से उन्होंने लेखक की पढ़ाई भी छुड़ा दी थी।

(viii) **(क)** सभ्यता का
व्याख्या: मुअनजो-दड़ो अपने काल में सभ्यता का केंद रहा होगा।

(ix) **(क)** मुर्दों का टीला
व्याख्या: मुअनजो-दड़ो का अर्थ है - मुर्दों का टीला।

(x) **(घ)** हथियारों का न मिलना
व्याख्या: मुअनजो-दड़ो के अजायबघर की खासियत है वहाँ हथियारों का न मिलना।

7. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लेख लिखिये:

(i) **विज्ञापन की बढ़ती हुई लोकप्रियता**

आज के युग को विज्ञापनों का युग कहा जा सकता है। आज सभी जगह विज्ञापन-ही-विज्ञापन नज़र आते हैं। बड़ी-बड़ी कंपनियाँ एवं उत्पादक अपने उत्पाद एवं सेवा से संबंधित लुभावने विज्ञापन देकर उसे लोकप्रिय बनाने का हर संभव प्रयास करते हैं। किसी नए उत्पाद के विषय में जानकारी देने, उसकी विशेषता एवं प्राप्ति स्थान आदि बताने के लिए विज्ञापन की आवश्यकता पड़ती है। इसके अतिरिक्त आज के समय में बिना विज्ञापन के उत्पादों का बिकना अत्यंत मुश्किल है।

विज्ञापनों के द्वारा किसी भी सूचना तथा उत्पाद की जानकारी, पूर्व में प्रचलित किसी उत्पाद में आने वाले बदलाव आदि की जानकारी सामान्य जनता को दी जा सकती है।

विज्ञापन का उद्देश्य जनता को किसी भी उत्पाद एवं सेवा की सही सूचना देना है, लेकिन आज विज्ञापनों में अपने उत्पाद को सर्वोत्तम तथा दूसरों के उत्पादों को निकृष्ट कोटि का बताया जाता है। आजकल के विज्ञापन भ्रामक होते हैं तथा मनुष्य को अनावश्यक खरीदारी करने के लिए प्रेरित करते हैं। विज्ञापनों का यह दायित्व बनता है कि वे ग्राहकों को लुभावने दृश्य दिखाकर गुमराह नहीं करें, बल्कि अपने उत्पाद के सही गुणों से परिचित कराएँ। तभी उचित सामान ग्राहकों तक पहुँचेगा और विज्ञापन अपने लक्ष्य में सफल होगा।

(ii) **मनोरंजन के आधुनिक साधन**

प्राचीन काल में मनोरंजन के साधन प्राकृतिक वस्तुएँ और मनुष्य के निकट रहने वाले जीव-जंतु थे। इसके अलावा वह पत्थर के टुकड़ों, कपड़े की गेंद, गुल्ली-डंडा, दौड़, घुड़दौड़ आदि से भी अपना मनोरंजन करता था। किंतु मनुष्य ने ज्यों-ज्यों सभ्यता की दिशा में कदम बढ़ाए, त्यों-त्यों उसके मनोरंजन के साधनों में भी बढ़ोत्तरी और बदलाव आता गया। आज प्रत्येक आयुवर्ग की रुचि के अनुसार मनोरंजन के साधन उपलब्ध हैं, जिनका प्रयोग करके लोग आनंदित हो रहे हैं। लेकिन जैसे-जैसे मनोरंजन के साधनों में बढ़ोतरी हुई है, वैसे-वैसे हमारे मानवीय मूल्यों में गिरावट आई है।

मनोरंजन के आधुनिक साधनों में रेडियो सबसे लोकप्रिय सिद्ध हुआ। आकाशवाणी के विभिन्न केंद्रों की स्थापना और उन पर प्रसारित क्षेत्रीय भाषाओं के कार्यक्रमों ने इसकी आवाज को घर-घर तक पहुँचाया।रेडियो के पश्चात टीवी ने भी मनोरंजन के क्षेत्र में एक आवश्यक भूमिका निभाई।

शिक्षित वर्ग के मनोरंजन के अन्य साधन हैं-पुस्तकालय में विभिन्न प्रकार की पुस्तकें पढ़ना तथा उनसे आनंद प्राप्त करना या कवि-सम्मेलन, नाट्यमंचन, मुशायरे के आयोजन में भाग लेना आदि। वर्तमान काल में विज्ञान की प्रगति के कारण मोबाइल फोन में ऐसी तकनीक आ गई है, जिससे गीत-संगीत सुनने, फ़िल्में देखने का काम अपनी इच्छानुसार किया जा सकता है। इस प्रकार मनोरंजन की दुनिया सिमटकर मनुष्य की जेब में समा गई है। निष्कर्षत: आज अपनी आय के अनुसार व्यक्ति अपना मनोरंजन कर सकता है क्योंकि मनोरंजन की दुनिया बहुत विस्तृत हो चुकी है।

(iii) **उपभोक्ता-शोषण**

शोषण को समझना आवश्यक है। उपभोक्ता-शोषण का तात्पर्य केवल उत्पादक व व्यापारियों द्वारा किए जाने वाले शोषण से ही लिया जाता है, परंतु 'उपभोक्ता' शब्द के दायरे में वस्तुएँ व सेवाएँ-दोनों का उपभोग शामिल है। सेवा क्षेत्र के अंतर्गत डॉक्टर, शिक्षक, प्रशासनिक अधिकारी, वकील आदि आते हैं। इन्होंने उपभोक्ता-शोषण के जो कीर्तिमान बनाए हैं, वे 'गिनीज बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स' में दर्ज कराने लायक हैं।
आज के दौर में उपभोक्ता-शोषण में बहुत वृद्धि हुई है।सब अपने से छोटे को किसी भी तरीके से दबाना चाहते हैं।एक अफ़सर अपनी सात पीढ़ियों को चैन से रखने के लिए सरकारी पैसे को निगल जाता है, तो शिक्षकों को ट्यूशन से फुर्सत नहीं मिलती। डॉक्टर प्राइवेट सर्विस को ही जनसेवा मानते हैं तो वकीलों को झूठे मुकदमों में आनंद मिलता है। इसी तरह व्यापारी भी कम मात्रा, मिलावट, जमाखोरी, कृत्रिम मूल्य-वृद्धि आदि द्वारा उपभोक्ताओं की खाल उतारने में लगा रहता है। मिलावट करने से न जाने कितनी जानें चली जाती हैं, इस बात का लक्ष्मी के पुजारियों को कोई गम नहीं।और हमारी सरकार को भी इससे कोई दरकार नहीं है।
उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 पास हुआ, परंतु उसके क्रियान्वयन में देरी की जाती है। सफ़ेदपोश कानून से बचने का रास्ता तालाश लेते हैं। अत: उपभोक्ता को अपने बचाव के लिए स्वयं जागरूक होना पड़ेगा। देश में सैकड़ों उपभोक्ता संगठन हैं, परंतु इनका कार्यक्षेत्र अभी तक महानगरों व नगरों तक ही सीमित है, आज जरूरत है कि ऐसे संगठनों को गाँव स्तर तक अपना कार्य करना चाहिए। इनके अलावा, रेडियो, दूरदर्शन, समाचार-पत्र आदि के माध्यम से उपभोक्ताओं को जाग्रत किया जा सकता है। यह कार्य सरकारी संगठन नहीं कर सकते। युवा इस क्षेत्र में प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं।युवाओं को जागरूक होकर समाज में शोषण के खिलाफ जागरूकता लाने की जरूरत है।

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) i. कहानी में पात्रों के द्वंद्व का बहुत महत्त्व है जो इस प्रकार हैं-

i. पात्रों का द्वंद्व कथानक को गतिशीलता प्रदान करता है।
ii. पात्रों के द्वंद्व से ही पात्रों के चरित्र का उद्‌घाटन होता है।
iii. पात्रों के द्वंद्व से ही लेखक पाठकों को संदेश देता है।
iv. पात्रों के द्वंद्व से ही कहानी का उद्देश्य स्पष्ट होता है।
v. पात्रों के द्वंद्व से ही पाठकों में जिज्ञासा उत्पन्न होती है।
vi. पात्रों के द्वंद्व से ही कहानी में रोचकता उत्पन्न होती है।

(ii) **अथवा**

i. मुद्रित माध्यमों की सबसे बड़ी सीमा यही है कि यह केवल पढे-लिखे और साक्षर व्यक्तियों के लिए उपयोगी है। जो निरक्षर हैं, उनके लिए मुद्रित माध्यमों यानि अखबार और पत्रिका का कोई महत्व नहीं है। इसके अलावा लेखक को पाठक की योग्यता के साथ उसकी रुचि का भी ध्यान रखना पड़ता है। तथा इनमें तुरंत घटी घटनाओं को नहीं दिखाया जा सकता है ।

(iii) i. रेडियो नाटक पर विशेष रूप से लागू होने वाला तत्त्व संवाद है। यह इसलिए है क्योंकि रेडियो के माध्यम से नाटक को श्रोताओं तक पहुँचाया जाता है और संवाद द्वारा चरित्रों की भावनाओं

(iv) **अथवा**

i. संवाददाताओं की रुचि और ज्ञान को ध्यान में रखते हुये उनके मध्य काम का जो बंटवारा किया जाता है, उसे ही बीट कहते हैं। जैसे एक संवाददाता की बीट अपराध है तब इसका अर्थ है कि उसका कार्यक्षेत्र अपने शहर या क्षेत्र में होने वाली आपराधिक गतिविधियों की रिपोर्टिंग करना है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) जब किसी घटना की सूचना देने और उसके दृश्य दिखाने के साथ प्रत्यक्षदर्शियों के कथन दिखा-सुनाकर समाचार को प्रमाणिकता के साथ प्रस्तुत किया जाता है, तो वह एंकर-बाइट कहलाता है।

(ii) संपादकीय नाम से नहीं छापा जाता क्योंकि-

i. अख़ार की आवाज़/आत्मा/पहचान

ii. व्यक्ति विशेष की राय, भाव या विचार नहीं

iii. समाचार पत्र (संपादक मंडल) की राय या दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति

(iii) एक खेल पत्रकार अपनी जानकारियों को दिलचस्प बनाकर पेश कर सकता है जब वह नवीनता, गहराई और मंचन को संयोजित करता है। वह महत्त्वपूर्ण तथ्यों को संक्षेप में प्रस्तुत करता है, रोचक कहानियों और विशेष रिपोर्टों का उपयोग करता है, व्यापक विश्लेषण और उपयोगी सलाह प्रदान करता है, और उदाहरणों के माध्यम से पठनीय और अनुग्रहीत करता है।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता में चिड़िया संध्या समय अपने नीड़ में लौट जाना चाहती है। उसके पंख थक चुके हैं, मगर वह उड़ रही है। जैसे ही उसे यह ध्यान आता है कि उसके नन्हे बच्चे नीड़ों से झाँक रहे होंगे, तो उसके पंखों में थकान की जगह तेज़ी आ जाती है और वह और अधिक तीव्र गति से उड़ने लगती है। वह अपने बच्चों की इच्छा को पूरा कर, उनके मुँह में दाना डाल, उन्हें स्नेह से अपने पंखों में छिपाना चाहती है अर्थात् कवि बच्चों की प्रत्याशा को जीवन की गति और आशा की किरण मानता है।

(ii) पंछी की उड़ान और कवि की कल्पना की उड़ान दोनों दूर तक जाती हैं। दोनों का लक्ष्य ऊँचाई मापना होता है। कविता में कवि की कल्पना की जो उड़ान है जिसकी सीमा अनन्त होती है, वह कल्पनाओं को पंख देकर अनंत ऊंचाइयों को छू सकता है इसीलिए कहा गया है - 'जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि'
जिस प्रकार फूल खिलकर अपनी सुगंध एवं सौंदर्य से लोगों को आकर्षित कर आनंद और जीवन देता है उसी प्रकार कविता भी सदैव खिली रहकर लोगों को भावों -विचारों का रसपान कराती है, पाठकों में नवीन स्फूर्ति एवं ऊर्जा का संचार करती है। दोनों का उद्देश्य एक समान अर्थात पाठकों एवं रसिको के हृदय को सुकून पहुँचाना होता है।

(iii) **किसबी, किसान-कुल** छंद के आधार पर पेट की आग की विशालता और भयावहता को तुलसीदास ने इस प्रकार प्रकट किया है कि आर्थिक स्थिति खराब होने की दशा में लोग अपनी

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) राखी के लच्छे बिजली कौधने की तरह चमकते हैं। बिजली की चमक सत्य को उद्घाटित करती है तथा राखी के लच्छे रिश्तों की पवित्रता को व्यक्त करते हैं। घटा का जो संबंध बिजली से है, वही संबंध भाई का बहन से है।

(ii) इस काव्यांश में गतिशील बिंब को साकार किया गया है। इस पंक्ति में चाक्षु बिंब भी विद्यमान है। भादों के जाते ही सुबह नई चमक-दमक के साथ आती है। शरद ऋतु की भोर को खरगोश की आँखों के समान लाल दिखाया गया है। इस पंक्ति को बोलते ही खरगोश की आँखों का बिंब हमारे सामने आ जाता है। शरद साइकिल चलाता तथा घंटी बजाता हमें दिखाई देता है। आकाश को मुलायम बताकर कवि ने जो कल्पना की है, वह अद्भुत है। यहाँ पतंग का आकाश में उड़ना एक नए दृश्य को दृष्टिगोचर करता है।

(iii) प्रातः कालीन सूर्य उदित हो रहा है 'जो ऐसा लगता है' मानो वह अपने सुनहरे वस्त्रों की रोशनी से आकाश और धरती दोनों को भर देता है। सभी अपने दिन की शुरुआत उस सुनहरी आभा से करते है। धीरे-धीरे दिन आगे बढ़ता है सूर्यास्त के समय जैसे हम अपनी पोशाक बदल कर सोने जाते है वैसे ही सूर्य हल्की लाल पोशाक पहनकर सोने के लिए तैयार हो जाता है। उसे देखकर सभी अपने दैनिक कार्य समाप्त कर सोने की तैयारी करने लगते है।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) औपचारिक भाषा-
   i. मूल में एक और तत्त्व की महिमा सविशेष है।
   ii. इस सिलसिले में एक और भी महत्त्व का तत्त्व है।
   iii. मेरे यहाँ कितना परिमित है और यहाँ कितना अतुलित है।

   अनौपचारिक भाषा-
   i. पैसा पावर है।
   ii. बाजार में एक जादू है।
   iii. नहीं कुछ चाहते हो, तो भी देखने में क्या हरज़ है।

(ii) आज के समय पानी के गहरे संकट से निपटने के लिए युवा वर्ग सामूहिक आंदोलन कर सकता है। वह शहर व गाँवों में पानी की फिजूलखर्ची को रोकने के लिए प्रचार आंदोलन कर सकता है। गाँवों में तालाब खुदवा सकता है जिससे वर्षा का जल संरक्षित किया जा सके। युवा वृक्षारोपण अभियान चला सकता है ताकि वर्षा अधिक हो तथा पानी भी संरक्षित रह सके। वह घर-घर में पानी के सही उपयोग की जानकारी दे सकता है।

(iii) लुट्टन की ढोलक का स्वर गाँववालों में असीमित उत्साह का संचार कर देता था। इस असीम उत्साह के बल पर वे विषम-से-विषम परिस्थितियों से भी वे लड़ सकते थे, परंतु ढोलक की थाप अपनी बुलंद आवाज़ से मलेरिया या हैजे जैसी किसी भी महामारी को समाप्त नहीं कर सकती थी। वह इस समस्या को समाप्त न कर, केवल उससे लड़ने की शक्ति प्रदान करती थी।

प्रताड़ित करती थीं। वह व उसके बच्चे घर, खेत व पशुओं का सारा काम करते थे, परंतु उन्हें खाने तक में भेदभावपूर्ण व्यवहार का समाना करना पड़ता था। लड़कियों को दोयम दर्जे का खाना मिलता था। उसकी दशा नौकरों जैसी थी। अतः उसने ससुरालवालों से अलग होकर रहने का फैसला किया।

अलग होते समय उसने अपने ज्ञान के कारण खेत, पशु, घर आदि में अच्छी चीजें ले ली। परिश्रम के बलबूते आर उसका घर समृद्ध हो गया।

(ii) भक्तिन की बेटी पर पंचायत के द्वारा पति के थोपे जाने की घटना विकृत न्याय व्यवस्था पर कठोर प्रहार करती है जहाँ स्त्रियों की इच्छा- अनिच्छा की कोई आवश्यकता समझी ही नहीं जाती है, उनके साथ पशु तुल्य व्यवहार किया जाता है। ऐसी व्यवस्था का विरोध करते हुये ऐसे निर्णय देने वालों के खिलाफ दंडनात्मक कार्यवाही होनी चाहिए।

(iii) समय बदल रहा है। अतः किसानों को भी उसके साथ बदलना पड़ रहा है। पहले किसान साग-सब्ज़ी व अन्न के उत्पादन को ही अपना सबकुछ मानता था। वे इसके जीवन के आधार थे। जीवन का आधार जीवन को सुचारू रूप से न चलाए पाएँ, तो वह किसी काम का नहीं है। आज का किसान साग-सब्ज़ी व अन्न का उत्पादन करके भी कुछ नहीं पाता है। उसका स्वयं का जीवन भी कठिनाई से चलता है। जो दूसरों का पेट पालता हो, वह स्वयं भूखा रह जाए तो यह विडंबना ही है। एक किसान स्वयं तो भूखा रह सकता है लेकिन अपने बच्चों को भूखा नहीं देख सकता। हमेशा आर्थिक तंगी में जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। साग-सब्ज़ी व अन्न उसे वह नहीं दे रहे हैं, जो उसे फूलों की खेती दे रही है। इसके लिए मेहनत कम और फल अधिक मिलता है। इसी कारण उसके बच्चे अच्छी शिक्षा, भरपूर पेट भोजन और एक अच्छी जीवन शैली जी पा रहे हैं। एक किसान को अन्नदाता कहा जाता है। अन्न हमें जीवन देता है। किसान को रक्षक माना जाता है यदि रक्षक ही भक्षक बन जाए, तो बाकी लोगों का क्या होगा। ऐसा हर किसान वर्ग के साथ नहीं हो रहा है। इस प्रकार का नुकसान छोटे किसान भोग रहे हैं। एक संपन्नशाली किसान यदि साग-सब्ज़ी व अन्न को छोड़कर फूलों की खेती करेगा, तो देश तथा विश्व की जनता जीवित कैसी रहेगी। यह भावना उचित नहीं है।

14. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :-

(i) चड्ढा सीधे असिस्टेंट ग्रेड में आया था। चूंकि वह नौजवान था इसलिए वह पंत बाबू के साथ धृष्टता किया करता था। उनकी उम्र का लिहाज भी वह नहीं करता था। वह उनकी घड़ी को चूनेदानी कहता और कभी-कभी उनकी कलाई पकड़ लेता। उसे इस बात का जरा भी खयाल नहीं होता था कि पंत उससे पद में वरिष्ठ व्यक्ति हैं। वह तो अपनी जवानी के जोश में जो कुछ करता उसे अच्छा लगता है। धीरे-धीरे यशोधर पंत ने इन बातों की ओर ध्यान देना छोड़ दिया। वे किसी तरह का विरोध भी नहीं करते थे।

(ii) राव साहब के दबाव के कारण लेखक को दोबारा पढ़ने की इजाजत मिली। वह स्कूल पहुँचा, परंतु वहाँ उसकी गली के दो लड़कों के अलावा सब अपरिचित थे। लेखक जिन्हें अपने से कम अकल का समझता था, अब उन्हीं के साथ बैठने के लिए विवश था। उसके कपड़े भी कक्षा के अनुरूप नहीं थे। उसे अपने अध्यापक का भी नहीं पता था। वह लट्ठे के बने थैले में पुरानी किताबें

सिर पर लपेट कर मास्टर की नकल करने लगा। उसने गमछा टेबल पर रख दिया, जिसके कारण मास्टर का गुस्सा भी सहन करना पड़ा। घर जाते समय वह सोच रहा था कि लड़के उसकी खिल्ली उड़ाते हैं, धोती खींचते हैं, गमछा खींचते हैं, ऐसे में वह कैसे पढ़ेगा? इससे अच्छा है कि मैं पाठशाला न जाऊँ और खेत में ही काम करता रहूँ। सवेरे उठते ही वह फिर पाठशाला चला गया। धीरे धीरे उसका आत्मविश्वास और सहपाठियों से परिचय बढ़ गया।

(iii) **अतीत में दबे पाँव** लेखक के वे अनुभव हैं, जो उन्हें सिंधु घाटी की सभ्यता के अवशेषों को देखते समय हुए थे। इस पाठ में लेखक सभ्यता के अतीत में झाँककर वहाँ के निवासियों और क्रियाकलापों को अनुभव करता है। वहाँ की एक-एक स्थूल चीज से मुखातिब होता हुआ लेखक चकित रह जाता है। वे लोग कैसे रहते थे? यह अनुमान आश्चर्यजनक था। वहाँ की सड़कें, नलियाँ, स्तूप, सभागार, अन्न भंडार, विशाल स्नानागार, कुएँ, कुंड और अनुष्ठान गृह आदि के अतिरिक्त मकानों की सुव्यवस्था देखकर लेखक महसूस करता है कि जैसे अब भी वे लोग वहाँ हैं। उसे सड़क पर जाती हुई बैलगाड़ी से रुनझुन की ध्वनि सुनाई देती है। किसी खंडहर में प्रवेश करते हुए उसे अतीत के निवासियों की उपस्थिति महसूस होती है। रसोईघर की खिड़की से झाँकने पर उसे वहाँ पक रहे भोजन की गंध भी आती है। यदि इन लोगों की सभ्यता नष्ट न हुई होती तो उनके पाँव प्रगति के पथ पर निरंतर बढ़ रहे होते और आज भारतीय उपमहाद्वीप महाशक्ति बन चुका होता, मगर दुर्भाग्य से ये प्रगति की ओर बढ़ रहे सुनियोजित पाँव अतीत में ही दबकर रह गए इसलिए 'अतीत में दबे पाँव' शीर्षक पूर्णतः सार्थक और सटीक है।